कोई भी इच्छा पैदा करना और उसे पूरा करना ऐसा ही है जैसे अपने पैर को कीचड़ में डालना और फिर साफ पानी से धोना और फिर यह सोचना कि "देखो मेरा पैर अब कितना साफ है! कुछ मिनट पहले यह इतना गंदा था!" आपने ही तो खुद इसे कीचड़ में डालकर गंदा कर दिया था। क्या आपको स्पष्टीकरण की आवश्यकता है? खैर, यह नीचे दिया गया है।

आप अपने ड्राइंग रूम में आराम से बैठे हैं। क्या करे? क्या करे? अरे! भगवान को ही सोचो। लेकिन आप इच्छा बनाते हैं, "मुझे कुछ खाद्य व्यंजनों का आनंद लेना चाहिए।" आप पास में एक दुकान से संपर्क करते है। रविवार होने के कारण दुकान बंद है। आपका इच्छा प्रबल है। बीस तीस किलोमीटर दूर अच्छे रेस्तरां में जाते है। खाना खाते है। घर वापस आकर फिर से ड्राइंग रूम में आराम से बैठते है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

प्रारंभिक और अंतिम स्थिती में अंतर क्या है? कुछ भी तो नहीं! इस प्रकार आप इच्छा पैदा करते है। इसे पूरा करने के लिए सभी तरह के कष्ट उठाते है। इसे अंततः पूरा करते है। और इसके बारे में संतुष्ट महसूस करते हैं। यदि आपने कोई इच्छा नहीं बनाई होती, तो कोई बेचैनी नहीं होती। दूसरे शब्दों में, आप पहले बेचैनी पैदा करते हैं और बाद में इसे शांत कर देते हैं।

एक कामगार है। उसकी कमाई घर चलाने और अपने परिवार की देखभाल करने के लिए काफी है। पर एक दिन वो सोचता है, "मुझे व्यवसाय शुरू करना चाहिए।" व्यापार का फैसला करने से पहले, उसने अनावश्यक रूप से सोचा कि वह अपने वर्तमान मामलों से नाखुश हैं और उन्हें अधिक धन या उच्च स्थिति की तलाश करनी चाहिए। खैर, वो व्यापार में सफल हो जाता है और अब उसके पास चार मर्सिडीज कारें और एक महंगा अपार्टमेंट है। फिर भी वह सोचता है कि उसे विकसित होने के लिए दूसरे उद्यम में निवेश करके विविधता लाने की जरूरत है।

फिर से वह ठीक वैसा ही सोचता है, जैसा कि उसने व्यवसाय शुरू करने से पहले सोचा था कि वह अपने वर्तमान मामलों से नाखुश है और उसे अधिक धन या उच्च स्थिति की तलाश करनी

चाहिए।

निष्कर्ष क्या है? इच्छाएँ ब्लैक होल की तरह होती हैं। वे कभी भी पूरी तरह से संतुष्ट नहीं होंगी। इच्छाएँ हर चीज का उपभोग करेगी जो भी उन्हें पेश किया जाएगा। सब खा जाएगी एवं कहेगी और लाओ। वो तृप्त नही होगी वरन अन्य माँग सामने रखेगी।

दूसरे शब्दों में, किसी भी वस्तु या स्थिति को प्राप्त करने से पहले, आपको लगता है कि वे वस्तुएं आपको खुश कर देंगी और आपको आगे किसी भी चीज की आवश्यकता नहीं होगी। उन वस्तुओं को प्राप्त करने के बाद, वे आपको अल्पकालिन भ्रामक आनंद देती हैं। लेकिन वह बाद में बिना किसी उत्साह के एक नियमित कार्य बन जाता है। फिर आप नयी इच्छा बनाकर खुशी की तलाश करते है। ये तब तक चलता रहेगा जब तक आप भगवान वाली खुशी हासिल नही करते।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132